‘हॉप-ऑन, हॉप-ऑफ’ जलवायु शासन: दुनिया जलवायु कार्रवाई पर क्यों भटक रही है?

UPSC प्रासंगिकता

- **GS पेपर II:** वैश्विक शासन, बहुपक्षीय संस्थान, जलवायु कूटनीति।
- **GS पेपर III:** जलवायु परिवर्तन, सतत विकास, जलवायु वित्त।
- **निबंध:** वैश्विक साझा संसाधन (Global commons), अंतर-पीढ़ीगत न्याय, राजनीति बनाम विज्ञान।

चर्चा में क्यों?

ऐसे समय में जब वैश्विक तापमान 2030 के दशक की शुरुआत में 1.5°C की सीमा को पार करने का अनुमान है, COP30 ने एक बार फिर वैश्विक जलवायु शासन (global climate governance) की गहरी संरचनात्मक कमजोरियों को उजागर किया है। इसने UNFCCC, क्योटो प्रोटोकॉल और पेरिस समझौते जैसे मौजूदा बहुपक्षीय ढांचे की प्रभावशीलता पर सवाल खड़े कर दिए हैं।

पृष्ठभूमि: जवाबदेही के बिना संरचना

वैश्विक जलवायु शासन कई वार्ता मार्गों के माध्यम से संचालित होता है —

- CMP (क्योटो प्रोटोकॉल)
- CMA (पेरिस समझौता)

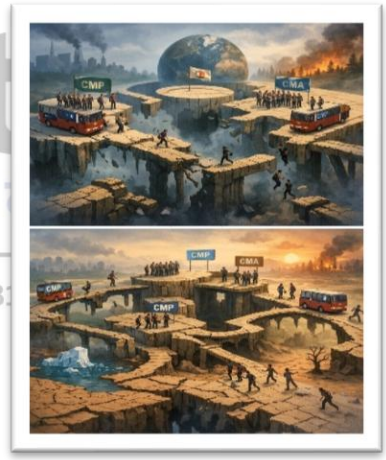

हालाँकि, ये मंच तेजी से "हॉप-ऑन, हॉप-ऑफ" (इच्छानुसार आने-जाने वाले) तंत्र की तरह बनते जा रहे हैं, जहाँ भागीदारी स्वैच्छिक है और बाहर निकलने की लागत न्यूनतम है।

यद्यपि जलवायु परिवर्तन का विज्ञान स्पष्ट है, लेकिन शासन अभी भी इन समस्याओं में फंसा हुआ है:

- **आम सहमति आधारित निर्णय प्रक्रिया**, जो हर देश को एक निहित वीटो (veto) शक्ति प्रदान करती है।
- **स्वैच्छिक प्रतिबद्धताएं** (NDCs) जिनमें कोई लागू करने योग्य बाध्यता नहीं है।
- **साझा लेकिन अलग-अलग जिम्मेदारियों** (CBDR) के सिद्धांत का कमजोर होना।

इसके परिणामस्वरूप, महत्वाकांक्षा केवल घोषणाओं तक सीमित है, कार्यान्वयन में नहीं।

वैश्विक जलवायु शासन के प्रमुख मुद्दे

1. ग्रह के ऊपर राजनीति (Politics over Planet)

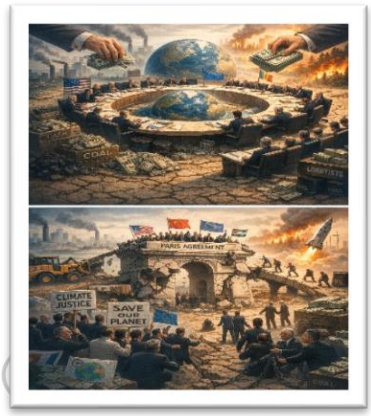

- राष्ट्रीय हित नियमित रूप से वैश्विक जलवायु तात्कालिकता पर हावी हो जाते हैं।
- आम सहमति का अर्थ सहयोग नहीं, बल्कि राजनीतिक पक्षाघात (political paralysis) बन गया है।
- COPs केवल घोषणाएं देते हैं, निर्णायक कार्रवाई नहीं।
- **परिणाम:** क्योटो विफल रहा; पेरिस समझौता धीरे-धीरे अपनी विश्वसनीयता खो रहा है।

2. अल्पकालिक अर्थशास्त्र (Economics of Short-Termism)

- बाजार अंतर-पीढ़ीगत न्याय (intergenerational equity) के बजाय निकट-अवधि के लाभ को प्राथमिकता देते हैं।
- आर्थिक निर्णय लेने में भविष्य की पीढ़ियों का कोई प्रतिनिधित्व नहीं है।
- जलवायु कार्रवाई सावधानी (precaution) के बजाय प्रोत्साहनों से संचालित होती है।
- **परिणाम:** विकास की अनिवार्यताएं पारिस्थितिक सीमाओं पर हावी हो जाती हैं।

3. नागरिकों का हाशिए पर होना

- आम लोगों के लिए, जलवायु परिवर्तन तब तक अमूर्त रहता है जब तक कि आपदा न आ जाए।
- सार्वजनिक दबाव की कमी राजनीतिक निष्क्रियता को बढ़ावा देती है।
- जलवायु पीड़ित केवल निष्क्रिय प्राप्तकर्ता बनकर रह जाते हैं, हितधारक नहीं।

COP30: भटकाव, दिशा नहीं

COP30 ने बिना किसी प्रगति के केवल प्रक्रिया के पैटर्न की पुष्टि की:

- **शमन (Mitigation):**
  - कोई बाध्यकारी उत्सर्जन कटौती नहीं।
  - जीवाश्म ईंधन को चरणबद्ध तरीके से समाप्त करने (fossil fuel phase-out) के लिए मजबूत भाषा का अभाव।

IAS PCS Institute
Result Mitra
रिजल्ट का साथी
@resultmitra www.resultmitra.com 9235313184, 9235440806

- 2024 में वैश्विक उत्सर्जन 57.4 $GtCO_2e$ — जो अब तक का सबसे अधिक है।

- **जलवायु वित्त (Climate Finance):**
  - विकासशील देशों को प्रति वर्ष $2.4–3 ट्रिलियन की आवश्यकता है।
  - वर्तमान प्रवाह $400 बिलियन से भी कम है।
  - इस पर कोई स्पष्टता नहीं है कि कौन भुगतान करेगा, कितना, या कब तक।
- **अनुकूलन (Adaptation):**
  - अनुकूलन वित्त को "तिगुना" करने के संकल्प में आधारभूत रेखा और बाध्यकारी स्रोतों की कमी थी।
- **हानि और क्षति (Loss and Damage):**
  - कोष (Fund) चालू तो हुआ, लेकिन इसमें पूंजी की भारी कमी है।
- **प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और न्यायसंगत संक्रमण (Just Transition):**
  - भाषण मजबूत थे, लेकिन संसाधन कमजोर। न्याय को स्वीकार किया गया, लेकिन प्रदान नहीं किया गया।

संरचनात्मक विरोधाभास

आज जलवायु शासन की विशेषता है:

- भटकाव (Drift), पतन (Collapse) नहीं।
- अपर्याप्तता (Inadequacy), अनुपस्थिति (Absence) नहीं।
- मंजिल का पता होने के बावजूद कोई चालक (Driver) नहीं।

प्रत्येक कारक अपने तर्क का पालन करता है:

- **विज्ञान** ⟶ साक्ष्य
- **राजनीति** ⟶ शक्ति
- **अर्थशास्त्र** ⟶ लाभ
- **नागरिक** ⟶ अस्तित्व

यह प्रणाली बिल्कुल वैसे ही प्रदर्शन कर रही है जैसी इसे डिज़ाइन किया गया था — और बिल्कुल वैसे ही विफल हो रही है जैसी भविष्यवाणी की गई थी।

IAS-PCS Institute
Result Mitra रिजल्ट
@resultmitra www.resultmitra.com 9235313184, 9235440806

आगे की राह: प्रदर्शन से परिवर्तन तक

- न्यूनतम साझा परिणामों को रोकने के लिए आम सहमति आधारित निर्णय लेने की प्रक्रिया में सुधार करें।
- विशेष रूप से वित्त और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण में परिचालन स्पष्टता के साथ **CBDR** को बहाल करें।
- ध्यान केवल शमन (mitigation) से हटाकर अनुकूलन-प्रथम (adaptation-first) रणनीतियों पर ले जाएं, विशेष रूप से विकासशील देशों के लिए।
- जलवायु जोखिमों को केवल पर्यावरण नीति में नहीं, बल्कि आर्थिक योजना और सार्वजनिक कल्याण में एकीकृत करें।
- स्वैच्छिक प्रतिज्ञाओं से परे जवाबदेही तंत्र को मजबूत करें।

निष्कर्ष

अपनी खामियों के बावजूद, UNFCCC वैश्विक जलवायु समन्वय के लिए एकमात्र सार्वभौमिक रूप से वैध मंच बना हुआ है। कोई भी अन्य वैकल्पिक मंच इसके बराबर समावेशिता या कानूनी ढांचा प्रदान नहीं करता है। इससे पीछे हटना कोई विकल्प नहीं है — क्योंकि भले ही देश जलवायु समझौतों में आ-जा (hop on and hop off) सकते हैं, लेकिन मानवता इस ग्रह को नहीं छोड़ सकती।

UPSC प्रारंभिक परीक्षा अभ्यास प्रश्न

Q1. वैश्विक जलवायु शासन तंत्र के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. पेरिस समझौते की बैठकों के रूप में कार्य करने वाला पक्षों का सम्मेलन (CMA) पेरिस समझौते से जुड़ा है।
2. UNFCCC ढांचे के तहत, देशों द्वारा की गई जलवायु प्रतिबद्धताएं कानूनी रूप से बाध्यकारी और लागू करने योग्य हैं।
3. साझा लेकिन अलग-अलग जिम्मेदारियों (CBDR) का सिद्धांत ऐतिहासिक उत्सर्जन और देशों की अलग-अलग क्षमताओं को मान्यता देता है।

उपरोक्त दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

A. केवल 1 और 2 B. केवल 1 और 3 C. केवल 2 और 3 D. 1, 2 और 3

सही उत्तर: B

IAS-PCS Institute
Result Mitra
रिजल्ट का साथी
@resultmitra www.resultmitra.com 9235313184, 9235440806

Q2. COP के परिणामों और जलवायु वित्त के संदर्भ में निम्नलिखित पर विचार कीजिए:

1. जलवायु-प्रेरित आपदाओं के प्रति सबसे संवेदनशील देशों की सहायता के लिए UNFCCC के तहत 'हानि और क्षति कोष' (Loss and Damage Fund) को चालू किया गया था।
2. हाल के COPs के तहत अनुकूलन वित्त प्रतिबद्धताएं कानूनी रूप से बाध्यकारी समयसीमा द्वारा पूरी तरह से समर्थित हैं।
3. वर्तमान वैश्विक जलवायु वित्त प्रवाह विकासशील देशों की अनुमानित आवश्यकताओं से काफी कम है।

उपरोक्त दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

A. केवल 1 and 3 B. केवल 1 C. केवल 2 and 3 D. 1, 2 and 3

सही उत्तर: A

UPSC मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

GS पेपर III (250 शब्द) "आज वैश्विक जलवायु शासन की विशेषता दिशा के बजाय भटकाव अधिक है।" हाल के COP परिणामों के आलोक में, मौजूदा जलवायु शासन ढांचे की संरचनात्मक सीमाओं का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए और इसे अधिक प्रभावी और न्यायसंगत बनाने के उपाय सुझाइए।

IAS-PCS Institute
Result Mitra
रिजल्ट का साथी
@resultmitra www.resultmitra.com 9235313184, 9235440806